तक ले जाना पड़ता है ।	की भागीदारी सुनिश्चित की जावे ।
व्यापारी मनचाहे दर पर पत्ते का क्रय करते हैं ।	समिति एवं व्यापारियों के बीच नियमित अंतराल में बैठक कराकर अधिक दर देने वाले व्यापारी से एक निश्चित समय हेतु समिति एवं व्यापारी के बीच क्रय अनुबंध कराया जावे ।
तौलने का साधन भरोसे का ना होना ।	उपरोक्त क्रय केन्द्रों पर सही रूप से तौलने के साधन समिति के माध्यम से उपलब्ध कराया जावे ।

माहुल पत्ते की प्राथमिक उपचार तथा ग्रेडिंग ।

प्राथमिक उपचार

- पत्ते को तोड़कर लाने के बाद घर के आँगन अथवा बाड़ी में धूप में सुखाना चाहिये।पत्ते को रात में घर के अंदर लाकर रख देना चाहिये, ओस में नही छोड़ना चाहिये ।पुनः दूसरे दिन पत्ते को धूप में फैलाकर सुखाना चाहिये ।
- वर्षा ऋतु में पत्ते को घर के भीतर आग से सुखाना चाहिये ।पत्ते को वर्षा के पानी से नहीं भीगने देना चाहिये अन्यथा पत्ते में काले दाग पड़ जाते है, जिससे पत्ते की गुणवत्ता खराब हो जाती है ।

ग्रेडिंग

- सुखे हुये पत्ते को दो ग्रेड में बांटा जाता है । अच्छे पत्ते को प्रथम ग्रेड में तथा कटे-फटे एवं काले धब्बे वाले पत्तों को दूसरी ग्रेड में रखा जाता है ।
- पत्ते की ग्रेडिंग हेतु ग्रामीणों को प्रशिक्षण दिया जायेगा ताकि वे ग्रेडेड पत्ता बाजार में लाकर १.५० से २.०० रूपये प्रति किलो तक अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकें ।

ग्रेडिंग के कार्य में स्व-सहायता समूह को क्रेता के साथ संलग्न किया जायेगा । जिससे पत्ते की ग्रेडिंग कर स्व-सहायता समूह को अतिरिक्त आय मिल सके तथा अधिक से अधिक ग्रामीण/ समूह सदस्य ग्रेडिंग कार्य में दक्षता हासिल कर सकें । इस कार्य से क्रेता के भंडारण, लोडिंग-अनलोडिंग एवं परिवहन व्यय में बचत हो सकेगा ।

सम्पर्क :

१. कृषि वानिकी प्रभाग
२. विस्तार प्रभाग

उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान
पो०आ०- आर०एफ०आर०सी०, मंड़ला रोड, जबलपुर - ४८२ ०२१ (म० प्र०)

उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

माहुल पत्ता प्रसंस्करण

छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज व्यापार एवम् विकास सहकारी संघ मर्यादित, रायपुर द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त

उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

द्वारा प्रकाशित

माहुल पत्ता प्रसंस्करण

छत्तीसगढ राज्य मे माहुल पत्ता बहुतायत में उपलब्ध होती है। यह माहुल पत्ता मुख्य रुप से कोरिया, उत्तर सरगुजा, दक्षिण सरगुजा जशपुर , धरमजयगढ, मारवाही, बिलासपुर, कवर्धा, उदन्ति वन मंडलों में उत्पादन होता है । माहुल पत्ता का वार्षिक उत्पादन औसतन ५०००० क्विंटल है। इसमें ६५ प्रतिशत से ज्यादा मात्रा बिना किसी प्रसंस्करण देश के अन्य राज्यों में मुख्यतः दक्षिण भारत में विक्रय की जाती है। माहुल पत्ता को प्राथमिक उपचार, ग्रेडिंग कर गुणवत्ता बढाना तथा दोना एवं पत्तल तैयार कर विक्रय किये जाने पर ग्रामिणों के लिये अतिरिक्त आय के स्त्रोत बन सकेगें। माहुल पत्ता संग्रहण दर रु. ५ प्रति किलो है इसकी प्रसंस्करण द्वारा १० रु. प्रति किलो अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं, ग्रामीणों द्वारा अपनी खाली समय में दोना-पत्तल तैयार कर रु. ६००-७०० रु. प्रतिमाह प्रति परिवार आय प्राप्त कर सकतें हैं।

संसाधन संवर्धन

माहुल पत्ता संग्रहण क्षेत्र मुख्य रुप से सघन रहती है। इस क्षेत्र में आग एवं चराई को प्रतिबंधित करते हुये क्षेत्र की सुरक्षा की जानी चाहिए । साथ ही आवश्यकतानुसार भू एवं जल संवर्धन कार्य करते हुये माहुल पत्ता उत्पादन को बढ़ावा देना है। इस हेतु संबंधित वन समितियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। इसके साथ माहुल पत्ता विनाश विहिन विदोहन हेतु नीचे दर्शाये अनुसार कार्य करना है -

माहुल पत्ता के बंडल बांधने हेतु बक्कल का उपयोग करने पर प्रतिबंध लगाया जाये।

१. माहुल बेला से पत्ते काटते समय तेज औजार का उपयोग किया जाये तथा प्रुंनिंग या ठूंठ ड्रेसिंग करते समय यह ध्यान दें की ठूंठ या शाखा फटने न पाये अन्यथा फटे हुये भाग वर्षा की पानी से सड़ने की संभावना है।

२. पत्ते परिपक्व होने पर ही तोड़ा जाये।

३. माहुल बेला जो अधिक क्षतिग्रस्त है उनसे पत्ते का संग्रहण ६ माह से एक वर्ष तक न किया जाये।

४. माहुल पत्ते के शीर्घ एवं अधिक संग्रहण के लिये ग्रामीणों द्वारा माहुल बेल को नीचे से काट दिया जाता हैं । जिससे उनकी पुर्नरुत्पादन क्षमता कम होती है। अतः माहुल पुर्नरुत्पादन को ध्यान में रखते हुये बेल को ऐसे स्थान पर काटा जाये जहॉ से अधिक शाखांए पुनः प्राप्त हो सकते हैं।

५. माहुल बेंलाओं की जड़े भूमि क्षरण के कारण खुल गयी है तो उन पर मिट्टी चढाने का कार्य किया जावेगा। जहॉ पर अधिक संख्या में माहूल बेलांए हैं वहां पर बेलांओं के ऊपरी सतह में कंटूर ट्रेंच निर्माण कर जल संबर्धन किया जावें परियोजना क्षेत्रा में छोटी नालियों में बोल्डर चेक डेम बनाया जावे।

अधोसंरचना विकास
प्रसंस्करण केन्द्र

माहुल पत्ता उपयोग कर सिलाई मशीन से पत्तल तैयार किया जाता है तथा दोना एवं मोल्डेड प्लेट लेमीनेटेड पेपर के साथ जोडकर मोल्डिंग मशीन में प्रेस किया जाता है।

कुछ आवश्यक बातें :

समस्यायें	सुझाव
ग्रामीण अधिक एवं शीघ्र संग्रहण की लालच में माहुल बेला को जड़ से काट देते हैं ।	विनाश विहीन विदोहन हेतु सतत् प्रशिक्षण देने की आवश्यकता हैं ।
बक्कल संग्रहण के लिये ग्रामीणों द्वारा माहुल बेला को काट दिया जाता है ।	माहुल बक्कल के संग्रहण पर प्रतिबंध लगाना आवश्यक है ।
वन क्षेत्र में अधिक जैविक दबाव होना।	समिति की सक्रिय भागी दारी से जैविक दबाव को नियंत्रित किया जाये ।
ग्रामीण प्रायः पत्ते को सुखाने के लिये रात में खुले आसमान में छोड़ देते हैं,पत्ते पर ओस पड़ती है जिससे पत्ता सूखने पर काला पड़ जाता है ।	पत्ते को रात में घर के अंदर लाकर रखना चाहिये पुनः दूसरे दिन बाहर ले जाकर धूप में सुखाना चाहिये ।
सुखाते समय पत्ते के वर्षा के पानी से भीगने से सूखने के बाद पत्ता काला पड़ जाता है ।	वर्षा ऋतु में पत्ते को घर के भीतर आग से सुखाना चाहिये ।
संग्राहकों द्वारा बाजार लाने तक पत्ते का ग्रेडिंग नहीं किया जाता है ।	यदि संग्राहक स्वंय ग्रेडिंग कर पत्ते को बेचता है तो उसे रू. १.५० से २.०० रूपये तक अतिरिक्त आय प्राप्त होगी ।
बिक्री हेतु संग्राहकों को सरबोझ से ५ से १० किलोमीटर माहुल पत्ते को परिवहन कर बिक्री केन्द्र	बिक्री केन्द्रों की संख्या बढ़ाया जाये एवं उपरोक्त बिक्री केन्द्रों पर स्व सहायता समूहों